E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 2 | February 2025

'वसीयतनामा' कहानी में वृद्ध के जीवन का संघर्ष

डॉ० पी० एम० भुमरे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग प्रमुख,
श्री मधुकरराव बापूराव पाटील खतगांवकर महाविद्यालय, शंकरनगर, तह- बिलोली, जि.- नांदेड

शोधसार

'वसीयतनामा' यह कहानी वृद्धों के प्रति हुए अन्याय, अत्याचार को अभिव्यक्त करती है। परिवारों के द्वारा ही वृद्धों का आर्थिक, सामाजिक, भावना के स्तर पर जो शोषण हो रहा है। उससे वृद्धों के सम्मानित जीवन जीने में ठेस पहुंचती है । इस कहानी के वल्लभदास जो वृद्ध हो चुके है। उनके नाम की संपत्ति दोनों बेटे आपस में बांटकर वसीयतनामा अपने नाम लिखना चाहते है। परंतु वल्लभदास जब-बीमार हो जाते है तब-तब उनके बेटों, बहुओं के द्वारा किसी भी प्रकार की सहायता नहीं की जाती ,उन्हें केवल पिता की वसीयत से लेना-देना है। अंत में दोनों बेटे होकर भी वल्लभदास की अंत्येष्टि क्रिया डॉ रितेश द्वारा की जाती है। डॉक्टर का वल्लभदास से खून का रिश्ता नहीं है। ऐसे करुणामय परिस्थितिजन्य परिवेश में कहानी का अंत होता है।

कुंजी शब्द – वसीयतनामा, वृद्धों की त्रासदी, वसीयत, रिश्ते,मानवीय, संबंध, पुरानी और नई पीढ़ी।

प्रस्तावना

जैसे-जैसे समय बदलता है वैसे-वैसे ही नई परिस्थितियों का उदय होता है अपितु साहित्य में वही भाव व्यक्त होते हैं जो समाज के अंतर्गत विद्यमान रहते हैं। साहित्य वह प्रतिबिंब है जो समाज में घटनाओं के रूप में घटित होता है। सामाजिक स्थितियाँ एक समान कभी नहीं रही अपितु समय के साथ-साथ परिस्थितियों में बदलाव आते हैं । यह बदलाव औद्योगिकरण, नगरीकरण और वर्तमान युग की तकनीकी के बढ़ते उपयोग से साहित्य भी प्रभावित होता रहा हैं। आधुनिक युग में जो बदलाव आ रहे हैं उससे हिन्दी कथा साहित्य में नए विमर्शों की उद्भावना हुई है। कोरोना के बाद सबसे ज्यादा वृद्धों का जीवन प्रभावित हुआ है। वृद्धों की त्रासदी की परंपरा एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील विषय है, जो समाज की बदलती संरचनाओं, परिवारों में टूटते रिश्तों, और वृद्धावस्था के दर्द को उजागर करती है। युवा पीढ़ी की व्यस्तताएँ और बदलते सामाजिक मूल्य वृद्धों को नजरअंदाज करने की वजह बनते हैं। वृद्ध अपने बच्चों और रिश्तेदारों से सहानुभूति की उम्मीद रखते हुए अकेलेपन का सामना करते हैं। समाज में वृद्धों को अक्सर 'व्यर्थ' समझा जाता है, क्योंकि वे शारीरिक और मानसिक रूप से पहले जैसे सक्षम नहीं होते। यह त्रासदी 21 वी सदी की कहानियो में प्रमुख रूप से उभरी है। पुराने समय में वृद्धों को सम्मान और सुरक्षा मिलती थी, लेकिन आधुनिक समय के व्यस्त जीवन से परिवारों में व्यक्तिगत स्वतंत्र प्रवृत्ति की चाहत के कारण वृद्धों का महत्व कम हो गया है। उपरोक्त समस्याओं की अभिव्यक्ती वसीयतनामा कहानी के पात्र वल्लभदास वृद्ध के माध्यम से हुई है ।

लेखक परिचय

संवेदनशील विषयों पर कलम चलाने वाले धन्यकुमार बिरादार महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के निवासी है। इनकी कुल 10 पुस्तके प्रकाशित हुई है। धन्यकुमार बिरादार की वसीयतनामा कहानी एक पिता और उनके दो बेटों

के आपसी पारिवारिक और आर्थिक व्यवहार के परस्पर संबंधों को दर्शाती हैं। धन का लालच पारिवारिक रिश्तों की पवित्रता को कैसे अंत की ओर ले जाने में कारणीभूत रहा है, कहानी इसकी और भी संकेत करती है।

कहानी में वृद्ध के जीवन का संघर्ष - 'वसीयतनामा' इस कहानी में मुख्य पात्र वल्लभदास है, जिनकी उम्र लगभग 75 साल है । वल्लभदास को तीन संताने है । जिसमें रमेश पेशे से इंजीनियर है और नागेश व्यापारी। दोनों पुत्र व्यवसाय से पैसे कमाते है। उनकी पुत्री का नाम समीक्षा है। साथ ही वल्लभदास के पत्नी का कोरोना संक्रमण से मौत चुकी है। वल्लभदास के पास पैसा अत्यधिक है परंतु पैसों के होते हुए भी पत्नी को बचा नहीं पाए। उनसे दोनों बेटों द्वारा संपत्ति का विभाजन बार-बार मांगा जाता है, न देने पर पिताजी के साथ झगड़ा भी करते हैं। यह दो प्रकार की मार वल्लभदास झेलते है। रमेश और नागेश को डर है कि, पिताजी अपने संपत्ति का हिस्सा उनकी बहन के नाम करेंगे। साथ ही बहन पूरी संपत्ति हड़प कर लेगी। इस डर से रमेश और नागेश द्वारा पिता की संपत्ति का वसीयतनामा लिखने की जिद्द की जाती है। इसके लिए भौतिक परिस्थितियाँ भी कारणीभूत रही है जैसे, "बच्चे सिर्फ भौतिक सुख के लिए ,पैसों के लिए मां-बाप को इज्जत दे या उन्हें अपनाएँ,यह बात मेरे गले नहीं उतर रही है। अपने बहू और पोते - पोतियो को अपने प्रति आकर्षित करने के लिए उसे उन्हें घुस देनी पड़ेगी। नहीं तो हो सकता है ,अपने ही पेट से जन्मे पुत्रों को वे लोग उसके खिलाफ कर दे। "1 पारंपरिक परिवारों में जहां बुजुर्गों को सम्मान और देखभाल मिलती थी, वहीं अब परिवारों में छोटे परिवार, एकल परिवार, और मोबाइल लाइफस्टाइल के कारण बुजुर्गों की देखभाल की समस्या बढ़ गई है। यह समस्याएं सामाजिक तुलना में कम है परंतु स्वास्थ्य सेवाओं के स्तर पर अधिक है। वृद्धावस्था में वृद्ध कई बीमारियों का शिकार हो जाते है। साथ ही बीमारियों का शिकार बनने की संभावना अधिक होती है। क्योंकि वृद्धावस्था में शरीर की प्रतिकार शक्ति कम हो जाती है, उचित -आहार और विहार न मिलने से संक्रमण का खतरा अधिक बढ़ जाता है।

वसीयतनामा कहानी में वल्लभदास जब बीमार हो जाते हैं तब उनकी देखरेख के लिए कोई नहीं है । ऐसी स्थिति में उनका ध्यान रखने के लिए किसी पारिवारिक सदस्य की आवश्यकता थी। वृद्धों की सेवा हेतू किसी का ना होना दुर्भाग्य है। जैसे,"दवाइयां न लाने के कारण स्वास्थ्य ढलता जा रहा था। "2 इलाज के समय ठीक-ठाक दवाइयां मिल जाती तो वल्लभदास को बीमारी से राहत मिलती । परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि, बीमार होने पर अपने काम नहीं आते। परंतु वल्लभदास की सेवा डॉक्टर द्वारा की जाती है। वर्तमान युगीन औद्योगिक उन्नति से कई सारे उद्योग और व्यवसायों का वर्चस्व बढ़ गया है जिसके कारण आर्थिक उन्नति के नए-नए क्षेत्र उदयोन्मुख हो रहे हैं। जिससे लोगों का आवागमन एक देश से दूसरे देशों में भी होता रहा है। ऐसी स्थिति में एक स्थान से दूसरे स्थान तक विचारों और संस्कृतियों का प्रसार होता है । वैश्विक स्थिति स्पर्धा की है। हर देश दूसरे देशों पर वाणिज्यिक और व्यावसायिक संबंधों धन कमाना चाहते है। आज युद्ध केवल युद्ध भूमि पर ही लड़ा नहीं जाता बल्कि तकनीकी,औद्योगिक व्यवस्थाओं के स्तर पर भी लड़ा जाता है। 21वीं सदी के विकास में शोध के साथ-साथ चीन में कोरोना वायरस का उदय हुआ। जिसने विश्व के सभी देशों की अर्थव्यवस्था को उध्वस्त किया साथ ही जिसके परिणाम सामाजिक और पारिवारिक रिश्तों पर भी हुए।

वसीयतनामा कहानी में वल्लभदास का जो परिवार था इस परिवार को भी कोरोना वायरस के दुष्परिणामों को झेलना पड़ा है जिसमें वल्लभदास पारिवारिक स्तर पर टूटे। हमारे परिवेश में पारिवारिक एकता की जो व्यवस्था थी वह खण्डित हो गई । जिसके कारण आर्थिक स्वावलंबन की ओर प्रवृत्ति बढ़ गई है। संयुक्त परिवार की जगह विभक्त परिवार पद्धतियों का प्रचलन बढ़ गया। जिसके कारण वृद्धों को अकेले घर ही रहना पडा। साथ ही साथ वृद्धों के प्रति देखने का दृष्टिकोण बदल गया । जिसके कई सारे दुष्परिणाम वृद्धों को झेलने पड़े हैं। जैसे,"वल्लभदास कोरोना पॉजिटिव पाए गए तब से वह घर में उपेक्षित रह गए"। 3 वल्लभदास घर के मुखिया थे। सभी कामकाज

उनके ही निर्देशों से होते थे । परंतु जैसे-जैसे दिन बीतते गए वैसे ही वल्लभदास की उम्र बढ़ती चली गई जिसके परिणाम से शरीर और मन कमजोर हो गया। साथ ही उनके परिवार वालों ने उनके साथ जो रवैया अपनाया उसके कारण भी शारीरिक और मानसिक दुर्बल प्रवृत्ति उनमें बढ़ गई । जब वृद्ध कामकाज ठीक से नहीं कर पाते तो उनके प्रति नकारात्मक भाव परिवारों में बढ़ने लगे। यह नफरत की प्रवृत्ति कोरोना में अधिक बढ़ गई। कोरोना बीमारी के कारण उनके बेटों ने संपत्ति में विभाजन मांगा परंतु यह संयोग ही था। असल में दोनों बेटों को पिताजी के प्रति किसी भी प्रकार की हमदर्दी नहीं थी । "परिवार जनों से उनकी अपेक्षाएं बढ़ जाती है परंतु सक्रिय पीढ़ी की भी अपनी समस्याएं ,काम, व्यस्तताएं और उलझनें है । वृद्ध से बातचीत के लिए उनके पास वक्त नहीं होता। "4 दोनों बेटों द्वारा अंत्येष्टि करने तक का भी समय नहीं है । जैसे ही संपत्ति के कागजात उन्हें मिलते है वैसे ही वे दोनों अंतिम रस्म किए बिना ही निकल जाते हैं। डॉ रितेश कहते हैं कि, "अब.... अब पिताजी की अंत्येष्टि करना और हां मैंने अस्पताल का बिल भर दिया है। आप सिर्फ वहां चले जाना बाकी व्यवस्था मैंने की है। "5 उपरोक्त डॉ रितेश के संवाद आज के मनुष्य में संवेदनहीनता किस हद तक बढ़ गई है इसका उदाहरण प्रस्तुत करती है। पिताजी की मृत्यु के बाद उनके बेटों में किसी भी प्रकार की सहानुभूति नहीं रहती। साथ ही पूरे जीवन भर जिसकी छाया में पले, बडे हुए बेटों ने अंत्येष्टि में न आना कितने शर्म की बात है। इससे मनुष्य कितना स्वार्थी बन गया है,इसके संकेत मिलते है।

21वीं सदी में पश्चिमी संस्कृति और आधुनिकता के प्रभाव ने पारंपारिक समाज में बदलाव आया है। "जो व्यक्ति साठोत्तर है, उनसे समाज भी कम ऊर्जा, कम स्वतंत्रता ,कम रचनाशीलता की अपेक्षा करता है। समाज को इससे मनोबल का भी ह्रास होता है"। 6 भारतीय परंपरा में संस्कारों को अधिक महत्व होता है। यह संस्कार एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक हस्तांतरित होते हैं । हमारी संस्कृति अतिथि देवो भव का सम्मान करनेवाली रही है जबकि इसका दूसरा पक्ष देखें तो वृद्धों को घर से बाहर निकालने की जो नई परंपरा शुरू हुई है जिसके कारण भारतीय संस्कृति का अवमूल्यन प्रदर्शित हो रहा है। वसीयतनामा कहानी में वल्लभदास ने अपने बेटों को पढ़ाया उन्हें अपने पैरों पर खड़े रहने हेतु शिक्षा दी, संस्कार दिए। उन्हें पारिवारिक स्तर पर स्वावलंबी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज की हकीकत है कि, पैसा कमाने के लिए हम किसी विदेशी, संस्कृति और परिवार में रहने जाते हैं । उस परिवेश में हमारे संस्कारों में वृद्धि होती है। इस दृष्टि से आज वर्तमान युग में रोजी-रोटी की तलाश में कई परिवारों का एक शहर से दूसरे शहर, देश में आवागमन हो रहा है जिसके कारण बेटे और पारिवारिक अलगाव निर्माण हो रहे हैं। किसी आहत हुए मनुष्य के प्रति हमारे हृदय में संवेदना होती है और हम मन ही मन भला होने की प्रार्थना करते हैं । आज यह कैसी करुणा उत्पन्न हो रही है जिसमें कोई भाव ही नहीं है । समाज में प्रतिष्ठा उसे ही मिल रही है, जिसके पास धन होता है। जैसे,"जैविक सच्चाई है कि, जो व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से अनुत्पादक और अनुपयोगी हो जाता है वह समाज में कोई योगदान नहीं दे पाता। ऐसी अवस्था में वृद्धों की स्थिति क्या होती है, वही समाज का दर्पण माना जा सकता है।" बल्कि वसीयतनामा इस कहानी के बेटों द्वारा ही अपने पिता के मरने का इंतजार किया जाता है और जब से पिता अस्पताल में भर्ती होते हैं तो उनके प्रति उनमें किसी भी प्रकार की संवेदना नहीं है। इससे यही स्पष्ट होता है कि, आज के हमारे रिश्ते केवल पैसों के आधार पर मजबूत होते हैं । कहा जाता है कि, मनुष्यों पर हुए संस्कार संकटो के समय में ही असली रूप में प्रकट होते हैं। जैसे, मनुष्य कोरोना की चपेट में आ गया तो मानवीय मूल्यों के टूटने की परम्परा शुरू हुई। इससे भी भयानक यह था कि, जिसे कोरोना ने चपेट में लिया लिया है उस मनुष्य की हालत दयनीय हो जाती थी । यह दयनीय स्थिति कोरोना से कम और आपसी रिश्तों के बदलते व्यवहारों के कारण और भी भयानक थी। कोरोना पॉजिटिव मरीज़ों के प्रति बहिष्कृत रवैया अपनाने से उनकी हालत और भी गंभीर बन गई थी। मनुष्य का एक दूसरे से जो प्रेम था। एक-दूसरे की समर्पण की संवेदना मर चुकी थी उसके असली कारण कुछ और ही रहे हैं। उनकी जड़ों तक इस कहानी ने पहुंचाकर मनुष्य के स्वार्थी

और क्षुद्र मानसिक प्रवृत्ति का परिचय दिया है। वल्लभदास को दो बेटे और दो बहू है। अच्छा खांसा परिवार है । परंतु रिश्तों में स्वार्थ और स्नेह के अभाव से खोकले हो चुके है। वल्लभदास का डॉक्टर से कोई रिश्ता न होने पर भी वे अपने पिताजी के समान व्यवहार करते हैं । साथ ही वल्लभदास की डॉक्टर ने जो सेवा की है उसके बारे में वल्लभदास निम्न शब्दों में भाव व्यक्त करते हैं। जैसे,"अपने पुत्र के रूप में मेरी और ध्यान दिया है। समय-समय पर दवाइयां देना बीपी शुगर जांच करने के साथ आत्मीयता से वार्तालाप करना मैं यह कभी भूल नहीं सकता हूं"। 8 वृद्ध हो जाने पर वृद्धों को किसी साधनों की जरूरत नहीं होती बल्कि उन्हें केवल अपने परिवार से सहयोग और भावनिक प्रोत्साहन की जरूरत होती है। अकेलेपन से उन्हें छुटकारा पाने हेतु केवल उनके साथ संवाद करने का अपेक्षाकृत भाव होता है। "वृद्धावस्था में मानसिक स्थिति को भावनात्मक ग्रंथि प्रभावित करने लगती है जिसके कारण हीनता की भावना एवं असहायता जैसे अलग-अलग लक्षण देखे जा सकते हैं, जिसमें व्यक्ति को किसी न किसी मनोग्रंथि का शिकार होने का खतरा रहता है। इस तरह से कई मनोवैज्ञानिक समस्याएं हो सकती है- विचारधारा, पसंद, दृष्टिकोण इत्यादि में स्थिरता आ जाने से भी समस्याएं उत्पन्न होती है। "9 मानसिक स्तर पर वृद्धों को जब परिवार के सदस्य आदर देते हैं तो उन्हें जीवन जीने के लिए प्रोत्साहन मिल जाता है।

निष्कर्ष

इस कहानी में वृद्धों के विमर्श के द्वारा समाज को यह संदेश दिया जाता है कि, वृद्धों की त्रासदी और उनके संघर्षों को समझने की जरूरत है। उनके प्रति सम्मान, सहानुभूति और उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता जरूरी है। यह कहानी वृद्धों की स्थिति को अधिक मानवीय दृष्टिकोण से देखने और समाज में वृद्धों के लिए एक बेहतर स्थान बनाने की आवश्यकता को उजागर करती है।

संदर्भ सूची -

1. मनीष सुथार - हिंदी कथा साहित्य में वृद्धि विमर्श दशा और दिशा - , वान्या प्रकाशन, कानपुर वर्ष-2022 पृष्ठ - 59
2. संपादक डॉ. प्रोफेसर संतोष विजय कुमार येरावार - साहित्य कलश तथा व्यावहारिक हिंदी- वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली - प्रकाशन वर्ष- 2024. पृष्ठ क्रमांक-91
3. संपादक डॉ. प्रोफेसर संतोष विजय कुमार येरावार, साहित्य कलश तथा व्यावहारिक हिंदी- वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली - प्रकाशन वर्ष- 2024 पृष्ठ क्रमांक -90
4. संपादक गिरिराज शरण अग्रवाल वृद्धावस्था की कहानी- उत्कर्ष प्रकाशन कानपुर,2009 पृष्ठ-6
5. संपादक डॉ. प्रोफेसर संतोष विजय कुमार येरावार, साहित्य कलश तथा व्यावहारिक हिंदी- वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली - प्रकाशन वर्ष- 2024 पृष्ठ क्रमांक - 91
6. संपादक गिरिराज शरण अग्रवाल वृद्धावस्था की कहानी पृष्ठ-क्रमांक- 16
7. चंद्र मौलेश्वर प्रसाद वृद्धावस्था : मानवजाति विज्ञान- वृद्धावस्था विमर्श ,शोध रितु जर्नल- 2021, पृष्ठ-30
8. संपादक डॉ. प्रोफेसर संतोष विजय कुमार येरावार, साहित्य कलश तथा व्यावहारिक हिंदी- वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली - प्रकाशन वर्ष- 2024पृष्ठ क्रमांक -91
9. मनीष सुथार - हिंदी कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श दशा और दिशा - वान्या प्रकाशन, कानपुर वर्ष-2022 पृष्ठ क्रमांक- 159